RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-04
April -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

सुरक्षा, ब्यापक सुरक्षा एवं मानव सुरक्षा में अन्तर्सम्बन्धः एक विश्लेषण

डा0 विजेन्द्र सिंह

विभागाध्यक्ष; रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन; सकलडीहा पी0 जी0 कालेज ,सकलडीहा बाजार, चन्दौली, उ0 प्र0।

ARTICLE DETAILS
Article History
Published Online: 15 April 2019

Keywords
मर्म मूल्य, खतरे, संघर्ष, विकास, शांति.

***Corresponding Author**
Email: vijendradefence[at]gmail.com

ABSTRACT
आधुनिक युग में सुरक्षा राष्ट्र एवं विश्व की सबसे प्रमुख ज्वलन्त समस्याओं में एक है। दुर्भाग्यवश सुरक्षा समस्याओं के आयाम इतने व्यापक हैं कि इनमें सम्बन्ध एवं अन्तर स्थापित कर पाना प्रायः कठिन होता है। इसके साथ ही साथ सुरक्षा को सटीक परिभाषित कर पाना भी सरल नहीं है। सुरक्षा की परम्परागत मान्यतायें एवं आधुनिक मान्यतायें अलग–अलग राष्ट्रों के लिए अलग–अलग ही सही प्रतीत होती हैं। सुरक्षा की आधुनिक मान्यताओं एवं परिभाषाओं का क्षेत्र इतना विस्तृत है कि यह मानव सुरक्षा के साथ ही साथ मानव विकास की अवधारणा को भी अति व्यापित कर लेता है। प्रस्तुत लेख सुरक्षा, मानव सुरक्षा एवं मानव विकास में अन्तर्सम्बन्धों की स्थापना एवं उसके घटकों पर प्रकाश डालता है।

सुरक्षा संघर्ष का कारण एवं उपाय दोनो है। यह मानव की सबसे बडी समस्या होती है जो कि उसके जन्म के साथ ही उत्पन्न हुई है। यह प्राणि–मात्र की आवश्यकता एवं स्वभाव दोनो है। इसकी आवश्यकता सभी स्तरों जैसे ब्यक्तिगत एवं सामाजिक (सामूहिक, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय, वैश्विक) पर प्रतीत होती है। इसी आधार पर ब्यक्ति को वैयक्तिक, राष्ट्र को राष्ट्रीय, क्षेत्र को क्षेत्रीय, विश्व को वैश्विक सुरक्षा की आवश्यकता होती है। सुरक्षा शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द सेक्यूरस (Secures) से हुई है, जिसका अर्थ है भय से मुक्त अथवा सुरक्षित रहना।[1] राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा सर्वप्रथम संयुक्त राज्य अमेरिका में द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात प्रस्तुत हुई। इसने उन अवधारणाओं को कुछ हद तक बदल दिया जो विभिन्न वाह्य एवं आन्तरिक खतरों से पार पाने के संयुक्त राज्य अमेरिका के संघर्ष की व्याख्या करती थीं।[2] सुरक्षा चिंतन के प्रारम्भ में ऐसा माना जाता था कि सैन्य शक्ति एवं राजनय ही राष्ट्रीय सुरक्षा के उपाय हैं एवं सैन्य खतरे ही मुख्य हैं जिनसे राज्य को सुरक्षा की आवश्यकता होती है।

'वाल्टर लिपमैन के अनुसार', कोई भी राष्ट्र या राज्य उस हद तक सुरक्षित है जब तक कि यदि वह युद्ध न चाहता हो तो उसे अपने मर्म–मूल्यों (राजनैतिक स्वतन्त्रता एवं क्षेत्रीय अखण्डता) का परित्याग न करना पड़े किन्तु यदि उसे चुनौती दी जाय तो युद्ध में विजय के द्वारा उनको रक्षित करने में वह समर्थ हो। (A nation has security when it dose not have to sacrifice its legitimate interests to avoid war, and is able, if challenged, to maintain them by war.)3

'आरनर्ड वुल्फर' के अनुसार, सुरक्षा से तात्पर्य राष्ट्र की खतरों से बिटने की योग्यता से है। (The absence of threats to acquired values.)4 'डेविड ए. बाल्डविन' ने माना है कि आर्नल्ड वुल्फर के इस मुहावरे जिसमें उन्होंने कहा है कि 'मूल्यों की प्राप्ति के लिए खतरों की अनुपस्थिति ही सुरक्षा है', में कुछ अस्पष्टता है। बाल्डविन ने इस मुहावरे को इस रूप में परिवर्तित कर दिया कि 'मूल्यों की प्राप्ति में खतरों की न्यूनतम् सम्भावना ही सुरक्षा है।' उनका मानना था कि जिस तरह किसी दूसरे राज्य से आक्रमण की सम्भावना होने पर प्रतिरोधकता आदि नीतियॉ बनायी जाती हैं उसी तरह प्राकृतिक खतरों यथा भूकम्प की स्थिति में भी उपाय किए जाते हैं। इन उपायों से भूकम्प की सम्भावना पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है किन्तु मूल्यों की प्राप्ति में होने वाले नुकसान कम हो जाते हैं। इस तरह बाल्डविन के द्वारा परिवर्तित रूपान्तरण 'मूल्यों की प्राप्ति' पर केन्द्रित हैं न कि खतरों की उपस्थिति अथवा अनुपस्थिति पर।[5]

आर्नल्ड वुल्फर ने यह भी कहा है कि सुरक्षा एवं आर्थिकी (economics) का सदैव ही अत्यन्त निकट सम्बन्ध रहा है।[6] सुरक्षा एवं अर्थ के अत्यन्त निकट सम्बन्ध का कारण आर्थिक क्षमता का सैन्य–शक्ति पर पड़ने वाला प्रभाव है। 'तेल कूटनीति' के प्रयोग ने यह सिद्ध कर दिया है कि प्राकृतिक–आर्थिक श्रोतों का स्त्रातेजिक महत्व भी अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष का कारण बन जाता है। खाड़ी संघर्षों ने इस वास्तविकता को पूरी तरह सतह पर ला दिया है। सैन्य एवं आद्योगिक उपक्रमों (Military & lndustrial Complex) का राजनीतिक प्रभाव भी सुरक्षा एवं अर्थ के निकट सम्बन्ध को ब्यक्त करता है।[7]

'स्टीफन डी0 क्रेजनर' के अनुसार– राष्ट्रीय सुरक्षा आर्थिक समृद्धि के मूल में निहित है। क्रेजनर से ही मिलते–जुलते विचार 'राबर्ट मैकनमारा' ने भी ब्यक्त किया है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

'राबर्ट मैकनमारा' के अनुसार– सुरक्षा सैन्य साज–समान ही नहीं है यद्यपि इसमें इसे शामिल किया जा सकता है। सुरक्षा सैन्य शक्ति ही नहीं है, यद्यपि यह इससे सम्बन्धित हो सकती है। सुरक्षा परम्परागत सैन्य गतिविधि ही नहीं है, यद्यपि यह इसके आस–पास हो सकती है। सुरक्षा विकास है। विकास के बिना सुरक्षा नहीं की जा सकती है।[2] सुरक्षा यदि कुछ लागू करती है तो यह न्यूनतम व्यवस्था एवं स्थायित्व लागू करती है। बिना आन्तरिक विकास के कम से कम एक न्यूनतम स्तर तक व्यवस्था एवं शांति सम्भव नहीं है। कानून एवं व्यवस्था वह ढाल है जिसके पीछे सुरक्षा एवं विकास जो मुख्य तत्व होते हैं, को प्राप्त किया जा सकता है।[2]

'बेरी बुजान' (Bary Buzan) के अनुसार– राष्ट्रीय सुरक्षा तीन स्तरों– वैयक्तिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय से होकर गुजरती हैं।[8] बैरी बुजान ने अपनी पुस्तक 'पीपल, स्टेट्स एण्ड फीयर' में सुरक्षा को प्रभावित करने वाले पाँच प्रमुख क्षेत्रों की पहचान की जो इस प्रकार हैं– सैन्य, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय।[9]

'डेविड ए. बाल्डविन' ने कहा कि सुरक्षा को निम्न दो पदों में परिभाषित किया जा सकता है?

1.सुरक्षा किसके लिए (security for whom) एवं

2.किन मूल्यों के लिए सुरक्षा (Security for which values)[6]

बाद में डेविड बाल्डविन एवं अन्य विचारकों ने सुरक्षा संकल्पना के अध्ययन को समझने के लिए निम्न पाँच प्रश्न उठाये और माना कि इन विशिष्ट पदों के साथ ही सुरक्षा के सही अर्थ को प्राप्त किया जा सकता है–

(1) सुरक्षा किसके लिए (Security for whom)

(2) किन मूल्यों के लिए सुरक्षा (Security for which Values)

(3) कितनी सुरक्षा (How much Security)

(4) किन खतरों से सुरक्षा (Security from what Thanks)

(5) किन साधनो से सुरक्षा (Security by what means)[5]

के0 सुब्रम्हणयम के अनुसार राष्ट्रीय सुरक्षा मात्र क्षेत्रीय अखण्डता को बचाये रखना ही नही है बल्कि इसका अर्थ है कि राष्ट्र औद्योगीकरण के मार्ग पर तेजी से चल रहा हो और उसके पास न्याय पर आधारित एक संतुष्ट समाज एवं सामान्य दृष्टिकोण हो। कोई भी वस्तु अथवा कारक जो विकास के इस मार्ग में आंतरिक या वाह्य रुप से खतरा उत्पन्न करता है वह राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा माना जाएगा।

इस तरह 1970 के दशक में सुरक्षा की चर्चा में आर्थिक सुरक्षा भी शामिल हो गई। वास्तव में 1980 के दशक में पर्यावरण की सुरक्षा के मुद्दे ने सम्पूर्ण विश्व का ध्यान आकृष्ट किया। 1990 के दशक में मानव सुरक्षा का मुद्दा भी केन्द्र में आ गया।[10]

व्यापक सुरक्षा (Comprehensive Security)

समग्र अथवा 'व्यापक' विकास/सुरक्षा (Comprehensive or 'over all' Development/Security) पद का प्रयोग सर्वप्रथम जापान में 1970 के दशक में हुआ था। इसका मुख्य उद्देश्य यह था कि युद्धकालीन अपनी भूमिका से आगे बढ़कर जापान अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में युद्धोत्तर काल में अपनी जगह मजबूत करे। सन् 1978 में जापान ने समग्र राष्ट्रीय सुरक्षा पर रिपोर्ट (Report on Comprehensive National Security) में निम्न छः लक्ष्य निर्धारित किए–

- संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ सैन्य एवं सामान्य सहयोग में निकटता लाना,
- अपनी सीमाओं की सुरक्षा के लिए जापान की क्षमता को बढ़ाना,
- चीन और सोवियत संघ से अपने रिश्ते सुधारना,
- शक्ति सुरक्षा को हासिल करना
- खाद्य सुरक्षा को हासिल करना
- बड़े भूकम्पों का सामना करने के उपाय तलाशना।[11]

डैविड डेविट (David Dewit) के अनुसार समग्र विकास/सुरक्षा सिर्फ एक उद्देश्यिका (Statement of Goals) ही नहीं थी, अपितु 'यह एक सुसम्बद्ध राष्ट्रीय शक्ति की श्रृंखला थी जिसमें आर्थिक कूटनीति और राजनीति जैसे विभिन्न कारक शामिल थे'।[11] जापान के विपरीत आसियान (ASEAN) ने विकास/सुरक्षा की व्यापक परिधि में घरेलू और असैन्य स्तरों को भी शामिल किया गया। जैसा कि मलेशिया के प्रधानमंत्री महाथिर मोहम्मद ने कहा–''राष्ट्रीय सुरक्षा राजनीतिक स्थिरता, आर्थिक स्थिरता, आर्थिक असफलता और सामाजिक सौहार्द के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई है। इनके बिना दुनिया के सारे हथियार किसी देश की सुरक्षा उसके शत्रु से नहीं कर सकते हैं जिसकी आकांक्षा शायद एक बार भी गोली चलाए बिना पूरी हो जाए''।[11] इस तरह ब्यापक सुरक्षा की संकल्पना ब्यापक मानव विकास से काफी मिलती–जुलती है।

मानव सुरक्षा (Human Security)

मानव सुरक्षा की संकल्पना मुख्य रूप से संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम रिपोर्ट (1994) से जुड़ी हुई है। इसका मुख्य श्रेय संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम से जुड़े हुए अर्थशास्त्री

RRIJM 2015, All Rights Reserved

'महबूब उल हक' जिनका 'मानव विकास सूचकांक' (HDI) एवं 'मानव प्रशासन सूचकांक (HGI) के निर्माण में मुख्य योगदान था, को जाता है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम रिपोर्ट (1994) में मानव सुरक्षा पर एक अलग अध्याय था। 'रिडिफाइनिंग सेक्यूरिटी द ह्यूमन डायमेंशन' नामक भाग में सुरक्षा के चारों प्रश्नों– सुरक्षा किसके लिए, किन मूल्यों के लिए सुरक्षा, किन खतरों से सुरक्षा, किन साधनो से सुरक्षा तथा परम्परागत सुरक्षा के विकल्पों एवं मानव विकास के आवश्यक पूरकों पर प्रकाश डाला गया था।[12]

रिपोर्ट के अनुसार मानव सुरक्षा के केन्द्र में व्यक्ति या सामान्य जनता है। मानव सुरक्षा में उन मूल्यों को प्राप्त करने की बात की जाती है जो व्यक्ति के दैनिक जीवन में संरक्षा (safety), कल्याण एवं सम्मान के लिए आवश्यक होते हैं। इस रिपोर्ट में परंपरागत सुरक्षा अवधारणा की उन कमियों को रेखांकित किया गया है कि जिन खतरों से सामान्य जनता अपने दैनिक जीवन में रूबरू होती है। इनका उल्लेख परम्परागत सुरक्षा अवधारणा में नहीं है। बहुत से लोगों के लिए रोगों, भूख, बेरोजगारी, अपराध, सामाजिक संघर्ष, राजनीतिक दबाव या उत्पीडन (repression) तथा वातावरणीय खतरों से बचाव ही सुरक्षा है।[12] मानव सुरक्षा इस बात से संबंधित है कि जनता समाज में कैसे जीती (live) एवं सांस लेती है? वह किस प्रकार अपनी सद्इच्छा की पूर्ति करती है? बाजार एवं सामाजिक अवसरों में उसकी कितनी पहुँच है और वह संघर्ष में रह रही है अथवा शांन्ति में? रिपोर्ट के अनुसार मानव सुरक्षा अपने अन्तर्गत व्यक्तिगत सद्इच्छा तथा भविष्य, व्यक्तिगत सामर्थ्य एवं अवसर की सुनिश्चितता को भी समाहित करती है। अपने निर्णय एवं भविष्य के प्रति सुनिश्चितता की भावना से युक्त व्यक्ति को स्वयं की देख–भाल के लिए सक्षम बनाने के लिए पर्याप्त सामर्थ्यवान एवं क्षमतावान होना चाहिए।[12] 'महबूब उल हक' के अनुसार मानव सुरक्षा ऐसे बच्चे की तरह है जो अभी मरा नहीं है। यह एक बीमारी की तरह है जो फैली नहीं है। एक काम जिसे रोका नहीं गया और यह एक जातीय तनाव है जो हिंसा में परिणत नहीं हुआ है। यह एक असंतुष्ट की तरह है जिसे शांत नहीं कराया गया है। मानव सुरक्षा का सरोकार हथियारों से नहीं है। इसका सरोकार मानव जीवन और गरिमा के साथ जुड़ा है, इसका सरोकार इस बात से है कि लोग समाज में कैसे रहते और जीते हैं। वे कैसे अपनी मनपसंद चीजें चुन पाते हैं। बाजार और सामाजिक अवसरों तक उनकी कितनी पहुँच है और क्या वे संघर्ष में जीते हैं या शांति में ?[13]

मानव सुरक्षा (Human Security) की संकल्पना **'भय से मुक्ति' एवं 'अभाव से मुक्ति'** (freedam from fear and freedam from want) पर आधारित है। हम व्यक्तिगत रूप से कितने सुरक्षित एवं स्वतन्त्र हैं? मानव सुरक्षा के विमर्श में यह मुख्य प्रश्न है। सुरक्षा किसके लिए? महबूब उल हक के अनुसार मानव सुरक्षा के केन्द्र में राज्य एवं राष्ट्र नहीं बल्कि व्यक्ति एवं सामान्य जनता है। उन्होंने तर्क दिया कि विश्व मानव सुरक्षा के एक नये युग में प्रवेश कर रहा है जिसमें सुरक्षा की पूरी संकल्पना नाटकीय ढंग से परिवर्तित हो जाएगी। वे लिखते हैं कि हमें मानव सुरक्षा की एक ऐसी नवीन संकल्पना की रचना की आवश्यकता है जो हमारी जनता के जीवन में प्रतिबिम्बित होती हो न कि हमारे देश के हथियारों में।[13]उन्होंने व्यक्तिगत सुरक्षा एवं कल्याण को सुरक्षा का मुख्य मूल्य माना। सुरक्षा की परम्परागत संकल्पना में जहॉ क्षेत्रीय अखंडता एवं राष्ट्रीय स्वाधीनता पर बल दिया जाता है वहीं मानव सुरक्षा 'सभी व्यक्तियों की सर्वत्र उनके घरों में, उनके व्यवसाय में, उनके मुहल्ले में, उनके समुदाय में, उनके पारिस्थितिक वातावरण में – सुरक्षा एवं कल्याण से संबंधित है।'[13]

हक ने प्रारम्भ में ड्रग्स, रोगों, आतंकवाद एवं गरीबी को इन मूल्यों के लिए खतरा बताया। बाद में उन्होंने पाया कि कुछ अन्य मूल खतरे भी हैं जैसे– असमान विश्व व्यवस्था (unequal world order) जिसमें कुछ राज्य एवं श्रेष्ठ लोग (Elites) एक विशाल मानव समूह पर हानिप्रद स्थिति तक प्रभावी हैं। यह विश्व व्यवस्था विकास की प्रचलित धारणा एवं अभ्यास, सुरक्षा के लिए शस्त्रों पर भरोसा, उत्तर एवं दक्षिण के वैश्विक विभाजन एवं वैश्विक संस्थाओं (जैसे संयुक्त राष्ट्र संघ) के लगातार हाशिए पर जाने से निर्मित हुई है।[13]

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) की रिपोर्ट के अनुसार मानव सुरक्षा के खतरों को निम्न सात भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. आर्थिक सुरक्षा को खतरा
2. खाद्य सुरक्षा को खतरा
3. स्वास्थ्य सुरक्षा को खतरा
4. वातावरणीय सुरक्षा को खतरा
5. वैयक्तिक सुरक्षा– हिंसक अपराध, ड्रग तस्करी, हिंसा एवं बच्चों एवं महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार।
6. सामुदायिक सुरक्षा के खतरे– परिवारों का खत्म होना, परम्परागत भाषाओं एवं संस्कृति का विघटन, नृजातीयता।
7. राजनैतिक सुरक्षा के खतरे– राज्य दबाव या उत्पीडन, नियोजित मानवाधिकार उल्लंघन, सैन्यीकरण।[13]

RRIJM 2015, All Rights Reserved

तालिका 1

राष्ट्रीय सुरक्षा और मानव सुरक्षा में अन्तर[14]

	राष्ट्रीय सुरक्षा	मानव सुरक्षा
किससे सुरक्षा	मुख्यतः राज्य	मुख्यतः व्यक्ति (वैयक्तिक)
किन मूल्यों के लिए सुरक्षा	प्रादेशिक अखण्डता और राष्ट्रीय स्वतंत्रता	निजी सुरक्षा और व्यक्तिगत स्वतंत्रता
किन खतरों से सुरक्षा	अन्य देशों से प्रत्यक्ष खतरा	प्रत्यक्ष और परोक्ष खतरे
किन साधनों से सुरक्षा	सुरक्षा के प्राथमिक उपकरण (उपाय) के रूप में बल का प्रयोग, किसी देश की अपनी संरक्षा के लिए एक पक्षीय ढंग से प्रयोग किया जाए।	द्वितीयक उपकरण (उपाय) के रूप में शक्ति का प्रयोग– प्रतिबंध, व्यक्तिगत सुरक्षा के प्रमुख तत्त्व के रूप में मानव विकास
	शक्ति संतुलन महत्त्वपूर्ण है, सैन्य क्षमता के समतुल्य सत्ता	शक्ति संतुलन की सीमित उपयोगिता, सौम्य सत्ता (soft power) महत्त्वपूर्ण है।
	राष्ट्रों के बीच सहयोग : सामंजस्यपूर्ण संबंध से ज्यादा अटल	राष्ट्रों के बीच सहयोग INGOs और NGOs प्रभावी हो सकते है।
	आदर्श और संस्थाओं का सीमित महत्त्व या मानक	आदर्श एंव संस्थाएँ महत्त्वपूर्ण, लोकतांत्रीकरण और संस्था बद्धता प्रभाव को बढ़ाते है।

निष्कर्ष –

उपरोक्त विवेचन के उपरान्त ऐसा प्रतीत होता है कि **राष्ट्रीय सुरक्षा आर्थिक, सैनिक एवं राजनैतिक शक्ति के प्रयोग तथा राजनय के अभ्यास के द्वारा राज्य की उत्तरजीविता को बनाए रखने की आवश्यकता है।**[7] जैसा कि उल्लिखित है राष्ट्रीय सुरक्षा राष्ट्र केन्द्रित संकल्पना है जबकि मानव सुरक्षा मानव केन्द्रित संकल्पना है। किन्तु राष्ट्रीय सुरक्षा का आधुनिक दृष्टिकोण भी यही कहता है कि राष्ट्रीय सुरक्षा का भी अन्तिम उद्देश्य 'जन कल्याण' (Public Welfare) ही होता है जो कि मानव सुरक्षा संकल्पना एवं मानव विकास संकल्पना की मूल भावना एवं अन्तरात्मा है।

एक स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि राष्ट्रीय सुरक्षा (National Security) और मानव सुरक्षा (Human Security) में प्राथमिकता किसे दी जानी चाहिए। यह तथ्य सही है कि राष्ट्रीय सुरक्षा में राष्ट्र सर्वोपरि है, उसकी अखण्डता एवं सम्प्रमुता सर्वोपरि है, जबकि अन्य (सामाजिक) मुद्दे गौण हैं। इसके विपरीत मानव सुरक्षा एवं मानव विकास में अन्य (सामाजिक) मुद्दे प्राथमिक है व देश की अखण्डता एवं सम्प्रभुता द्वितीयक। दूसरे शब्दों में पश्चिमी राष्ट्रों में सीमा एवं वाह्य आक्रमण की समस्यायें लगभग समाप्त प्राय हैं, अतः उनके लिए मानव सुरक्षा की प्राथमिकता होनी चाहिए, जबकि एशियाई, अफ्रीकी एवं द0 अमेरिका के देशों जहाँ संघर्ष, सीमा एवं वाह्य आक्रमण, तख्ता पलट, विद्रोह, विप्लव, आतंकवाद की समस्यायें अधिक हैं, उनके लिए राष्ट्रीय सुरक्षा की प्राथमिकता होनी चाहिए। किन्तु दोनों को चाहे राष्ट्रीय सुरक्षा हो अथवा मानव सुरक्षा किसी भी स्थिति में (पूर्वी एवं पश्चिमी राष्ट्रों में) विस्मृत नहीं किया जा सकता, केवल इनकी प्राथमिकता बदल सकता है। मानव सुरक्षा की संकल्पना मानव विकास के अत्यधिक नजदीक है, दोनों के उद्देश्य बिना एक दूसरे के अपूर्ण ही रहेंगे।

सुरक्षा चिंतन पर वाल्ट ने चेतावनी दी कि अगर सुरक्षा के अध्ययन का और अधिक विस्तार किया गया तो पर्यावरण, वंश, जाति, बाल अपराध या आर्थिक मंदी आदि भी सुरक्षा के खतरे में शामिल हो जाएँगे तो इससे इसका बौद्धिक सामंजस्य नष्ट हो जाएगा ओर इस प्रकार की समस्याओं का समाधान और भी कठिन हो जाएगा। लेकिन उनका यह सुझाव था कि सुरक्षा अध्ययन को इस तरह परिभषित किया जा सकता है–''खतरे का अध्ययन और सैन्यबल का प्रयोग व नियंत्रण''। सुरक्षा चिंतन जितना संकुचित होगा उतना ही लाभदायक होगा।[10]

प्रारम्भ में सुरक्षा चिंतन पर यथार्थवादी विचारकों का अधिक प्रभाव था जिनके अनुसार शक्ति ही सुरक्षा का अन्तिम सर्वमान्य समाधान हो सकती है। दूसरी ओर आदर्शवादी विचारकों ने शांति एवं मानवाधिकारों पर कुछ अधिक ही जोर दिया जो कुछ हद तक अव्यावहारिक है। यद्यपि नव यथार्थवादी दृष्टिकोण 'शक्ति की विलासित' से निकलने में मदद करता है और आदर्शवादी दृष्टिकोण की तरह अव्यावहारिक भी नहीं है। सुरक्षा चिंतन का तार्किक दृष्टिकोण इससे भी आगे जाकर कहता है कि सुरक्षा शक्ति का कारक नहीं बल्कि सहयोगी है तथा यह सदैव शांति का परिणाम नहीं भी होती है।

अन्ततः यह सत्य है कि सुरक्षा की कोई एक निश्चित व सर्वमान्य परिभाषा नहीं दी जा सकती है। इसीलिए अर्नाल्ड बुल्फर ने इसे 'एक अस्पष्ट प्रतीक' (An ambiguous Symbol) तथा बैरी बुजान ने 'अविकसित संकल्पना' कहा। अर्नाल्ड बुल्फर का यह कथन भी सही है कि राष्ट्रीय सुरक्षा का तात्पर्य भिन्न–भिन्न राष्ट्रों के लिए भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में भिन्न–भिन्न होता है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संदर्भ सूची

1. डूपोन्ट एलन (1997). न्यू डायमेंशन आफ सेक्यूरिटी, द न्यू सेक्यूरिटी एजेण्डा इन द एशिया पैसिफिक रीजन, लंदन,
2. सिंह वि. (2018). सुरक्षा की संकल्पना एवं सुरक्षा चिंतन का विकास, *जर्नल ऑफ एडवांसेज एण्ड स्कालरली रिसर्चेज इन एलाइड एजूकेशनए,* वा 15
3. लिपमैन वाल्टर (1943). यू एस फारेन पालिसी : शील्ड आफ द रिपब्लिक, लिटिल ब्राउन, बोस्टन
4. वुल्फर्स, आ. (1952). नेशनल सेक्यूरिटी ऐज ऐन इंटरनेशनल एजेण्डा, *पोलिटिकल साइंस क्वाटरली*, 67
5. बाल्डविन, डे. (1997). द कनसेप्ट आफ सेक्यूरिटी, *रिव्यू आफ इण्टरनेशनल स्टडीज,* ब्रिटिश इंटरनेशनल एशोसियेशन, वा0 23,
6. वुल्फर्स आरनर्ड (1962). डिस्कार्ड एण्ड कोलैबोरेशन; बाल्टीमर
7. सिंह विजेन्द्र (2009). भारत की आन्तरिक सुरक्षा समस्यायें, अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स; नई दिल्ली, 2009
8. वाल्ट, एस. एम.(1991). द रेनेसा ऑफ सेक्यूरिटी स्टडीज, *इंटरनेशनल स्टडीज क्वाटरली,* वा0 35, पृ सं 211
9. विलियम, पी. डी.(2008). सेक्यूरिटी स्टडीज : एन इंट्रोडक्शन, रूटलेज, न्यूयार्क
10. उम्मन, टी. के. (2010). सुरक्षा एक नया दृष्टिकोण, प्रभात प्रकाशन दिल्ली [1]1'शांति और संघर्ष समाधान का परिचय' (एम जी पी 005), गॉधीवादी अध्ययन कार्यक्रम, इन्दिरा गॉधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
11. वाजपेयी कांति (2000). ह्यूमन सेक्युरिटीः कांसेप्ट एंड मीजरमेंट, क्राक इंस्टीट्यूट अकेशनल पेपर
12. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की मानव विकास रिपोर्ट, 1994

RRIJM 2015, All Rights Reserved